विनोद रैना

एक निजी श्रद्धांजली

फिरोज़ मेहदी

मेरे लिए यह विश्वास करना बहुत मुश्किल हो रहा है कि विनोद रैना अब हमारे साथ नहीं रहे। मैं सचमुच बेहद ऊर्जा व प्रेरणा से भरपूर एक व्यक्ति के संपर्क आया था। चार साल पहले उन्हें मालूम हो गया था कि उन्हें कैंसर हो गया है। इन चार सालों में मैं उनसे मोंट्रिल, पेरिस, दिल्ली, ढाका व ट्यूनिस आदि शहरों में विभिन्न अवसरों पर मिलता रहा। मैंने कभी उन्हें थका हुआ या किसी काम से बचते हुए नहीं पाया। न ही कभी उन्होंने अपनी अवस्था के बारे में कोई शिकायत की बल्कि उन्होंने यह तथ्य साझा किया कि वे कैंसर के बहुत कम लोगों में पाए जाने वाले रूप से पीड़ित हैं।

इन चार सालों में अपनी बीमारी के बारे में उन्होंने मुझे पहली बार 23 अगस्त 2013 को लिखा, ''प्रिय फिरोज़ मैं काफी अस्वस्थ हूं और जल्द की कीमो (थैरेपी) लेने वाला हूं। अगर तुम्हें उचित लगता है तो तुम विवेकपूर्ण ढंग से मित्रों को सूचित कर सकते हो... सप्रेम विनोद'' और बीस दिन बाद वे गुज़र गए।

मैं विनोद से लगभग दो दशकों से परिचित रहा हूं। वे वैकल्पिक गतिविधियों से जुड़ी चार संस्थाओं की गतिविधियों में भाग लेने बहुत बार मोंट्रिल आते रहे हैं। हर बार वे मेरे साथ ही रुकते थे। भारतीय शास्त्रीय संगीत व पाक कला के प्रति उनका जुनून मुझसे मेल खाता था। एक बार हमारे घर पर उन्हें किसी राग के कवर वाली सीडी दिखाई दी वे उसे कॉपी करना चाहते थे लेकिन डिब्बा अंदर से खाली था। शायद गलती से मैंने सीडी किसी दूसरे केस में रख दी थी! बड़े धैर्य के साथ उन्होंने सैकड़ों केस खोल-खोलकर देखे। लेकिन दुर्भाग्य से वह मिली नहीं। एक साल बाद जब मैं उनसे भोपाल में उनके घर पर मिला तब उन्होंने वही राग मुझे अपने कम्प्यूटर पर सुनवाई। फैज़ अहमद फैज़ की कविताएं गाना उन्हें प्रिय था और कविताओं की एक किताब हमेशा ही उनके बैग में साथ रहती थी। उन्होंने हमारे लिए स्वादिष्ट कश्मीरी भोजन पकाया। हमारे अपार्टमेंट में वे जिस कमरे में आकर ठहरते थे उसे हमारी बेटी 'विनोद चाचा का कमरा' ही कहती है।

सैद्धांतिक भौतिकी में पीएचडी करने के बाद वे दिल्ली विश्वविद्यालय में प्रोफेसर हो गए थे। उन्होंने अपनी नौकरी से इस्तीफा दिया

और भारत के मध्यप्रदेश नामक राज्य के होशंगाबाद जिले में होशंगाबाद विज्ञान कार्यक्रम को विकसित करने के लिए चले गए। बाद में और साथियों के साथ मिलकर उन्होंने एकलव्य की स्थापना की जिसने स्कूलों में विज्ञान पाठ्यचर्या विकसित करने का काम किया। यह एक तरह से राष्ट्रीय पाठ्यचर्या 2005 बनने के पूर्व की भूमिका थी। उन्होंने ऑल इंडिया लिट्रेसी मूवमेंट के साथ नज़दीकी से जुड़कर काम किया और भारत ज्ञान विज्ञान समिति के महासचिव बने।

वे बहुत शुरुआत से 2001 में ही वर्ल्ड सोश्यल फोरम की प्रक्रिया की तरफ आकर्षित हो गए थे। मुझे बहुत अच्छे से याद आता है कि मोंट्रिल में विकल्पों पर विचार से संबंधित एक मीटिंग में उनके व ब्राजील से आए कार्यकर्ताओं के बीच हुई एक चर्चा में इस फोरम को भारत लाने की संभावनाओं की प्रक्रिया शुरू हुई और अंततः सन 2004 में यह भारत में मुंबई में हुआ।

एक शिक्षाविद् के तौर पर विनोद का काम तथा शिक्षा का अधिकार अधिनियम में उनका योगदान भारत में सबको भलिभांति पता है। लेकिन यह बात बहुत कम लोग जानते हैं कि फिलिस्तीन में वर्ल्ड एज्युकेशन फोरम को गठित करने का प्रस्ताव भी उन्होंने ही लिखा था। सन 2010 के अप्रैल में फिलिस्तीन के रामल्ला में उनके द्वारा एक प्रेस कांफ्रेन्स को संबोधित करते हुए इसकी आधिकारिक तौर पर शुरुआत हुई।

विनोद हमारे फेडरेशन अल्टरनेटिव्स इंटरनेशनल के संस्थापक सदस्य थे। उनके सैकड़ों दोस्त व प्रशंसक विभिन्न संस्थाओं व नेटवर्कों के माध्यम से शोक संदेश भेज रहे हैं।

ठीक इसी समय मोरक्को में वर्ल्ड सोश्यल फोरम की अगली आईसी मीटिंग के दौरान अल्टरनेटिव्स इंटरनेशनल एक अंतर्राष्ट्रीय स्मृति बैठक आयोजित करेगा।

विनोद की मृत्यु 12 सितम्बर, 2013 को हुई थी। उनकी पत्नी व जीवन साथी अनीता रामपाल ने मुझे लिखा, ''वे अंत समय तक संघर्ष करते रहे और आखिरी समय में जब यह महसूस होने लगा कि उनका शरीर साथ छोड़ने लगा है तब भी उन्होंने हार नहीं मानी और अंत में फुसफुसाते हुए यह कहा कि वे मुक्त होना चाहते हैं। उनके साथ के उस क्षण को याद करके मैं दहल जाती हूं, किन्तु दशकों तक उनके साथ साझा किए समान काम व विचार के प्रति किए गए अपने वादे को निभाते हुए मैं इससे बाहर निकल आऊंगी।''

तहेदिल से मेरी सारी संवेदनाएं व पूरी हिम्मत अनीता, उनके परिवार व दोस्तों के साथ हैं। ◆